

एम.एन. श्रीनिवास

मैसूर नरसिम्हाचार श्रीनिवास (1916–1999) भारतीय समाजशास्त्र के अग्रणी विद्वान थे, जिन्हें भारतीय समाजशास्त्र का जनक माना जाता है। उन्होंने संरचनात्मक-कार्यात्मकता (Structural Functionalism) और क्षेत्रीय अध्ययन (Fieldwork-Based Ethnography) के माध्यम से भारतीय समाज, विशेष रूप से जाति व्यवस्था, सामाजिक गतिशीलता, और परंपरा-आधुनिकता के बीच संतुलन को समझने का एक अनूठा ढांचा प्रदान किया। उनकी अवधारणाएँ—संस्कृतीकरण (Sanskritization), प्रभुत्वशाली जाति (Dominant Caste), और पश्चिमीकरण (Westernization)—भारतीय समाजशास्त्र में आधारभूत हैं। श्रीनिवास का दृष्टिकोण माइक्रो-स्तर पर केंद्रित था, जो गाँव-आधारित अध्ययनों और प्रत्यक्ष अवलोकन पर जोर देता था, जो जी.एस. घुर्ये के इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण और ए.आर. देसाई के मार्क्सवादी दृष्टिकोण से भिन्न था।

जीवनी और बौद्धिक पृष्ठभूमि जन्म: 16 दिसंबर 1916, मैसूर, कर्नाटक। परिवार: ब्राह्मण परिवार; परंपरागत हिंदू संस्कृति से प्रभावित।

शिक्षा: मैसूर विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातक और स्नातकोत्तर। बॉम्बे विश्वविद्यालय में जी.एस. घुर्ये के मार्गदर्शन में पीएचडी शुरू की। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (1945–1951) में रैंडक्लिफ-ब्राउन और इवांस-प्रिचार्ड के मार्गदर्शन में पीएचडी पूरी की, जहाँ संरचनात्मक-कार्यात्मकता और नृवंशविज्ञान से प्रभावित हुए।

कैरियर:

1959 में दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना। ऑक्सफोर्ड, शिकागो, और स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर। 1971 में बेंगलुरु में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन संस्थान (ISEC) की स्थापना।

मृत्यु: 30 नवंबर 1999, बेंगलुरु।

“एम.एन. श्रीनिवास भारतीय समाजशास्त्र के अग्रणी विद्वान थे, जिन्होंने संस्कृतीकरण, प्रभुत्वशाली जाति, और क्षेत्रीय अध्ययनों के माध्यम से भारतीय समाज की गतिशीलता को समझाया।”

प्रमुख अवधारणाएँ: विस्तृत विश्लेषण

श्रीनिवास की अवधारणाएँ भारतीय समाज की जाति-केंद्रित गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए आधारभूत हैं। ये साक्षात्कार में डेमो लेक्चर, जवाब, या शोध प्रस्ताव के लिए महत्वपूर्ण हैं। **यूपीएससी 2022 प्रश्न:** “श्रीनिवास की संस्कृतीकरण और प्रभुत्वशाली जाति अवधारणाओं को विस्तार से समझाएँ” (15 अंक)

(i) संस्कृतीकरण (Sanskritization)

निम्न जातियाँ या समूह उच्च जातियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय) की धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक प्रथाओं (जैसे, शाकाहार, वैदिक रीति, मंदिर पूजा) को अपनाकर सामाजिक स्थिति में सुधार करते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक गतिशीलता का एक रूप है, जो जाति पदानुक्रम में ऊँचा स्थान दिलाती है।

विश्लेषण:

संस्कृतीकरण सामाजिक परिवर्तन को दर्शाता है, जो परंपरा (जाति) और आधुनिकता (गतिशीलता) के बीच संतुलन बनाता है। यह आर्थिक सुधार (जैसे, भूमि स्वामित्व) से प्रेरित हो सकता है, लेकिन श्रीनिवास ने सांस्कृतिक आयामों पर जोर दिया। यह प्रक्रिया लंबी होती है, अक्सर एक पीढ़ी से अधिक समय लेती है।

उदाहरण:

मैसूर में लिंगायतों ने ब्राह्मणवादी प्रथाएँ (जैसे, शाकाहार) अपनाकर सामाजिक स्थिति बढ़ाई।

समकालीन: दलित समूहों द्वारा बौद्ध मंदिर निर्माण या OBC समूहों द्वारा वैदिक रीतियों को अपनाना।

आलोचना:

ब्राह्मणवादी मूल्यों को सुदृढ़ करता है, जो दलित आंदोलनों (जैसे, अंबेडकर) के लिए अस्वीकार्य।

आर्थिक शोषण (जैसे, देसाई का वर्ग विश्लेषण) और लिंग मुद्दों की अनदेखी।

केवल ऊपरी गतिशीलता पर ध्यान; निम्न गतिशीलता पर कम।

साक्षात्कार प्रश्न: “संस्कृतीकरण की समकालीन प्रासंगिकता।”

जवाब: “संस्कृतीकरण आज सोशल मीडिया पर धार्मिक पहचान (जैसे, Instagram पर पूजा-पाठ, TikTok पर भक्ति गीत) या OBC समूहों द्वारा वैदिक प्रथाओं को अपनाने में दिखता है। लेकिन इसे वर्ग और लिंग के साथ जोड़कर व्यापक विश्लेषण की आवश्यकता है।”

साक्षात्कार टिप: इसे समकालीन मुद्दों (जैसे, डिजिटल युग, आरक्षण आंदोलन) से जोड़ें। उदाहरण: “Pew Research 2023 के अनुसार, 70% भारतीय युवा ऑनलाइन धार्मिक सामग्री देखते हैं, जो डिजिटल संस्कृतीकरण को दर्शाता है।”

(ii) प्रभुत्वशाली जाति (Dominant Caste)

वह जाति जो किसी क्षेत्र में संख्यात्मक, आर्थिक, और राजनीतिक रूप से प्रभावशाली होती है, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था को आकार देती है। यह जाति अक्सर मध्य या उच्च जाति होती है, जो भूमि, शिक्षा, और स्थानीय सत्ता पर नियंत्रण रखती है।

विश्लेषण:

प्रभुत्वशाली जाति सामाजिक स्थिरता और गतिशीलता को प्रभावित करती है।

यह स्थानीय सत्ता संरचनाओं (जैसे, पंचायतें) को नियंत्रित करती है।

आधुनिक संदर्भ में, ये जातियाँ राजनीतिक प्रभाव (जैसे, वोटबैंक) में महत्वपूर्ण हैं।

उदाहरण: कर्नाटक में ओक्कालिगा, आंध्र में रेड्डी, राजस्थान में जाट।

समकालीन: उत्तर प्रदेश में यादवों का पंचायती राज और राजनीति में प्रभाव।

आलोचना:

सत्ता की गतिशीलता को सरल करता है; लिंग, अल्पसंख्यक, या निम्न जातियों की भूमिका पर कम ध्यान।

आर्थिक शोषण (जैसे, देसाई का वर्ग विश्लेषण) की अनदेखी।

साक्षात्कार प्रश्न: “प्रभुत्वशाली जाति की अवधारणा और पंचायती राज।”

जवाब: “प्रभुत्वशाली जातियाँ, जैसे जाट या यादव, पंचायती राज में सत्ता बनाए रखती हैं, लेकिन 73वें संशोधन (1992) ने निम्न जातियों और महिलाओं को सशक्त किया है। उदाहरण: उत्तर प्रदेश में यादवों का प्रभाव।”

साक्षात्कार टिप: इसे स्थानीय शासन (पंचायती राज) या 2024 लोकसभा चुनाव में जातिगत वोटबैंक से जोड़ें।

(iii) पश्चिमीकरण (Westernization)

विवरण: पश्चिमी शिक्षा, तकनीक, और जीवनशैली (जैसे, व्यक्तिवाद, अंग्रेजी भाषा) का भारतीय समाज पर प्रभाव। यह प्रक्रिया औपनिवेशिक काल में शुरू हुई और शहरी मध्यम वर्ग में प्रबल थी।

विश्लेषण:

पश्चिमीकरण ने सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा दिया, जैसे शिक्षा और शहरीकरण। यह परंपरा (जैसे, जाति, संयुक्त परिवार) के साथ समन्वय करता है। श्रीनिवास ने इसे आधुनिकता का एक रूप माना, जो संस्कृतीकरण से अलग है।

उदाहरण:

- औपनिवेशिक काल में बंगाल के ब्राह्मणों ने अंग्रेजी शिक्षा अपनाई। शहरी भारत में पश्चिमी फैशन (जैसे, जीन्स), स्टार्टअप संस्कृति, या Netflix का प्रभाव।

आलोचना:

- वैश्वीकरण (1991 के बाद) के दौर में सीमित व्याख्या, क्योंकि यह केवल पश्चिमी प्रभाव पर केंद्रित है।
- ग्रामीण समाज पर कम ध्यान; देसाई का वैश्वीकरण विश्लेषण अधिक व्यापक।

साक्षात्कार प्रश्न: “पश्चिमीकरण और वैश्वीकरण में अंतर।”

“पश्चिमीकरण औपनिवेशिक प्रभाव (जैसे, अंग्रेजी शिक्षा) पर केंद्रित है, जबकि वैश्वीकरण वैश्विक पूंजी और संस्कृति (जैसे, McDonald's, Netflix) को शामिल करता है। समकालीन भारत में दोनों का संयोजन दिखता है।”

साक्षात्कार टिप: इसे डिजिटल युग (जैसे, OTT प्लेटफॉर्म, स्टार्टअप) से जोड़ें।

(iv) क्षेत्रीय अध्ययन (Fieldwork-Based Ethnography)

विवरण: गाँवों में प्रत्यक्ष अवलोकन और भागीदारी के माध्यम से सामाजिक संरचनाओं (जैसे, जाति, परिवार) का अध्ययन। श्रीनिवास ने इसे भारतीय समाजशास्त्र में स्थापित किया।

विश्लेषण:

क्षेत्रीय अध्ययन अनुभवजन्य डेटा प्रदान करता है, जो सामाजिक प्रक्रियाओं को सूक्ष्म-स्तर पर समझता है। यह दृष्टिकोण पश्चिमी नृवंशविज्ञान (जैसे, मालिनोव्स्की) से प्रेरित था, लेकिन भारतीय संदर्भ के लिए अनुकूलित।

उदाहरण:

मैसूर के रामपुरा गाँव में *द रिमेम्बर्ड विलेज* का अध्ययन। समकालीन: ग्रामीण भारत में मनरेगा या डिजिटल साक्षरता पर अध्ययन।

आलोचना: स्थानीय फोकस; व्यापक आर्थिक परिवर्तनों (जैसे, देसाई का पूंजीवाद विश्लेषण) की अनदेखी।

व्यक्तिपरक हो सकता है, जैसे श्रीनिवास के अपने अनुभवों पर आधारित *द रिमेम्बर्ड विलेज*।

साक्षात्कार प्रश्न: “श्रीनिवास के क्षेत्रीय अध्ययन की प्रासंगिकता।”

जवाब: “श्रीनिवास का क्षेत्रीय अध्ययन सामाजिक संरचनाओं को प्रत्यक्ष रूप से समझता है, जैसे मनरेगा का ग्रामीण प्रभाव। यह समकालीन नृवंशविज्ञान, जैसे आदिवासी समुदायों या शहरी स्लम्स के अध्ययन में प्रासंगिक है।”

साक्षात्कार टिप: इसे समकालीन नृवंशविज्ञान (जैसे, आदिवासी समुदाय, डिजिटल ग्रामीण भारत) से जोड़ें।

प्रमुख रचनाएँ और थीम

श्रीनिवास की रचनाएँ भारतीय समाजशास्त्र में क्षेत्रीय अध्ययनों और जाति गतिशीलता की नींव रखती हैं। ये साक्षात्कार में उद्धृत करने योग्य हैं।

(i) द रिमेम्बर्ड विलेज (1976)

थीम: मैसूर के रामपुरा गाँव का नृवंशविज्ञानी अध्ययन; जाति, संयुक्त परिवार, और सामाजिक समन्वय पर केंद्रित।

विश्लेषण: गाँव को सामाजिक एकीकरण की इकाई माना। प्रभुत्वशाली जाति (ओक्कालिगा) और संस्कृतीकरण की प्रक्रियाएँ देखीं। यह पुस्तक व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित थी, क्योंकि श्रीनिवास के नोट्स 1960 में आग में नष्ट हो गए थे।

उदाहरण: रामपुरा में निम्न जातियों ने मंदिर प्रवेश के लिए ब्राह्मणवादी प्रथाएँ अपनाईं। संयुक्त परिवार ने सामाजिक स्थिरता बनाए रखी।

महत्व: भारत में नृवंशविज्ञान का मील का पत्थर। सामाजिक संरचनाओं को प्रत्यक्ष अवलोकन से समझने का आधार।

साक्षात्कार प्रश्न: “*द रिमेम्बर्ड विलेज* की प्रासंगिकता।”

जवाब: “द रिमेम्बर्ड विलेज भारतीय समाजशास्त्र में क्षेत्रीय अध्ययनों की नींव रखता है। यह जाति, परिवार, और सामाजिक समन्वय को समझने का अनुभवजन्य आधार देता है, जो समकालीन ग्रामीण अध्ययनों (जैसे, मनरेगा) में प्रासंगिक है।” **साक्षात्कार टिप:** इसे ग्रामीण विकास नीतियों (जैसे, मनरेगा, डिजिटल ग्राम) से जोड़ें।

(ii) कास्ट इन मॉडर्न इंडिया (1962)

थीम: जाति व्यवस्था की गतिशीलता; संस्कृतीकरण और पश्चिमीकरण के माध्यम से परिवर्तन।

विश्लेषण: जाति केवल स्थिर पदानुक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक गतिशीलता का माध्यम है। आधुनिक संदर्भ (शिक्षा, शहरीकरण, राजनीति) में जाति की भूमिका।

उदाहरण: शहरी मध्यम वर्ग में जातिगत संगठन (जैसे, मराठा महासंघ) । समकालीन: दलितों द्वारा बौद्ध धर्म अपनाना या OBC द्वारा आरक्षण की माँग।

महत्व: जाति को गतिशील प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया। राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों में जाति की भूमिका को उजागर किया।

साक्षात्कार प्रश्न (यूपीएससी 2019): “श्रीनिवास की संस्कृतीकरण अवधारणा की प्रासंगिकता।”

जवाब: “संस्कृतीकरण आज भी प्रासंगिक है, जैसे OBC समूहों द्वारा धार्मिक प्रथाओं को अपनाकर सामाजिक स्थिति बढ़ाना या सोशल मीडिया पर धार्मिक पहचान (जैसे, Instagram पर पूजा)। लेकिन इसे आर्थिक और लिंग विश्लेषण के साथ जोड़ना होगा।”

साक्षात्कार टिप: इसे 2024 लोकसभा चुनाव में जातिगत वोटबैंक या आरक्षण आंदोलनों से जोड़ें।

(iii) इंडिया: सोशल स्ट्रक्चर (1980)

थीम: भारतीय समाज की संरचना; जाति, परिवार, धर्म, और गाँव की भूमिका।

विश्लेषण: परंपरा (जाति, संयुक्त परिवार) और आधुनिकता (शिक्षा, शहरीकरण) का संयोजन। सामाजिक स्थिरता और समन्वय पर जोर।

उदाहरण:

- ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार सामाजिक एकीकरण का आधार।
- समकालीन: शहरी भारत में संयुक्त परिवार का कमजोर होना, व्यक्तिवाद का उदय।

महत्व: भारतीय समाज की जटिलताओं को संक्षेप में प्रस्तुत करता है। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन को समझाता है।

साक्षात्कार प्रश्न: “श्रीनिवास का सामाजिक संरचना पर दृष्टिकोण।”

जवाब: “श्रीनिवास ने भारतीय समाज को कार्यात्मक इकाई माना, जहाँ जाति और परिवार सामाजिक स्थिरता बनाए रखते हैं, लेकिन शहरीकरण और शिक्षा इसे बदल रहे हैं। उदाहरण: डिजिटल युग में व्यक्तिवाद।”

साक्षात्कार टिप: इसे शहरीकरण, डिजिटल युग, या परिवार संरचना में बदलाव से जोड़ें।

(iv) सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया (1966)

थीम: सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ; संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण, और शहरीकरण।

विश्लेषण: सामाजिक परिवर्तन को परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन के रूप में देखा जाति और धर्म सामाजिक परिवर्तन को आकार देते हैं।

उदाहरण: औपनिवेशिक काल में पश्चिमी शिक्षा का प्रभाव। समकालीन: डिजिटल युग में सोशल मीडिया पर धार्मिक प्रथाएँ।

महत्व: सामाजिक परिवर्तन के लिए एक स्वदेशी ढांचा प्रदान किया। भारतीय समाजशास्त्र को वैश्विक मंच पर स्थापित किया।

साक्षात्कार प्रश्न: “श्रीनिवास का सामाजिक परिवर्तन पर दृष्टिकोण”

जवाब: “श्रीनिवास ने सामाजिक परिवर्तन को संस्कृतीकरण और पश्चिमीकरण के माध्यम से समझा, जो परंपरा और आधुनिकता को संतुलित करता है। समकालीन उदाहरण डिजिटल संस्कृतीकरण और शहरी व्यक्तिवाद हैं।”

साक्षात्कार टिप: इसे वैश्वीकरण, डिजिटल युग, या 1991 के उदारीकरण से जोड़ें।

उपलब्धियाँ

श्रीनिवास की उपलब्धियाँ भारतीय समाजशास्त्र को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने और स्वदेशी दृष्टिकोण प्रदान करने में महत्वपूर्ण थीं।

संस्थागत योगदान:

- **दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स:** 1959 में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना, जो भारत में समाजशास्त्र अध्ययन का केंद्र बना।
- **सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन संस्थान (ISEC):** 1971 में बेंगलुरु में स्थापना